ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 264-266

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

स्वच्छता के प्रति जागरुकता बढ़ाने में स्वच्छ भारत अभियान की भूमिका का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन द्वितीयक स्त्रोंतों पर आधारित

1. नीलम सिंह
2. डॉ0 मधु त्यागी

1. शोध अध्येत्री– बी0 एस0 ए0, 2. एसोसिएट प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग बी0 एस0 ए0 कॉलेज मथुरा सम्बध्द – डॉ भीमराव आ0 वि0 वि0 आगरा (उ0प्र0) भारत

Received-21.06.2022, Revised-25.06.2022, Accepted-29.06.2022 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः – *शोध पत्र में स्वच्छ भारत अभियान के सम्बन्ध में जन सामान्य की जागरुकता एवं प्रतिक्रिया का स्तर जानने का प्रयत्न किया गया है एवं साफ सफाई को लेकर जागरुकता का अध्ययन किया गया है। स्वच्छ भारत अभियान भारत का प्रमुख स्वच्छता हस्तक्षेप अक्टूबर 2019 तक खुले मे शौच को समाप्त करने के लिए निर्धारित है। स्वच्छ भारत अभियान ने राष्ट्रीय स्तर पर शौचालय कवरेज में सुधार किया है। स्वच्छ भारत नागरिक समुदायों का हिस्सा बन गये हैं। अध्ययन वर्तमान स्थिति और की गई गतिविधियों की स्थिरता की समीक्षा करता है और भारत में प्रभावी एसडब्ल्यूएम के लिए एसबी मिशन के तहत योजनाओं में कुछ सुधार के दायरे का प्रस्ताव करता है। अध्ययन निश्चित रूप से निरन्तर सुधार के लिए समय–समय पर योजना की समीक्षा करने में मदद करेगा।*

कुंजीभूत शब्द– स्वच्छ भारत अभियान, जन सामान्य, जागरुकता, प्रतिक्रिया, निर्धारित, राष्ट्रीय स्तर, नागरिक समुदायों।

स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार के द्वारा 2 अक्टूबर 2014 को शुरू किया गया इस योजना का मुख्य उद्देश्य है कि गलियों, सड़कों तथा पूरे देश को साफ व स्वच्छ बनाना है। इस अभियान की शुरूआत वर्तमान प्रधानमंत्री जी ने की है। वर्तमान प्रधानमंत्री जी की पहल है कि "स्वच्छ भारत सुंदर भारत"। स्वच्छ भारत अभियान का मुख्य उद्देश्य सामुदायिक शौचालयों के निर्माण के माध्यम से खुले में शौच की समस्या को कम करना या समाप्त करना है। सरकार ने 2 अक्टूबर 2019 तक महात्मा गाँधी जी के जन्म की 150वीं वर्शगांठ तक ग्रामीण भारत में 1.96 लाख करोड़ रूपये की अनुमानित लागत से 1. 2 करोड़ शौचालयों का निर्माण करके खुले में शौच मुक्त भारत (औडीएफ) को हासिल करने का लक्ष्य रखा है। स्वच्छता से सम्बन्ध सार्वजनिक स्वास्थ्य की स्थिति से है। जो स्वच्छ पेयजल और मानव मल–मूत्र सीवेज के उपचार और निपटान से सम्बन्धित है। मल के साथ ही साथ मानव सम्पर्क को रोकना स्वच्छता का हिस्सा है जैसे उदा. साबुन से हाथ धोना स्वच्छता का उद्देश्य एक स्वच्छ वातावरण तैयार करके मानव स्वास्थ्य की रक्षा करना है। जैसा कि महात्मा गाँधी जी के विचार है कि "मैं किसी को गंदे पैर के साथ अपने मन से नहीं गुजरने दूंगा"। "यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं है तो वह स्वस्थ नहीं रह सकता है"। स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत कई योजनाएं शामिल की गई, जिसमें ग्रामीणों के घरों में शौचालय निर्माण प्रमुख है। जिससे लोग आस–पास की स्वच्छता के महत्व को समझेंगे और वातावरण को स्वच्छ रखेंगे।

स्वच्छता का अर्थ– स्वच्छता के अर्थ से तात्पर्य स्वास्थ्य की रक्षा और बीमारी की रोकथाम के लिए इस्तेमाल की जाने वाली देखभाल, प्रथाओं से है। स्वच्छता घरों और सार्वजनिक स्थानों की साफ सफाई से सम्बन्धित है। यह फ्रेंच (Hygiene) शब्द से आता है।

स्वच्छता की परिभाषा– विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार– स्वच्छता का सामान्य आशय उन प्रावधानों सुविधाओं और सेवाओं से है जो मानव के मल–मूत्र और कचरे का सुरक्षित निस्तारण करते हैं।

स्वच्छता का महत्व– अभी कोरोना के समय में रोगियों की बढ़ती जनसंख्या एवं अस्पतालों में साफ–सफाई को लेकर ध्यान देने की आवश्यकता से यह बात स्पश्ट हो गई है कि जीवन में स्वच्छता की कितनी जरूरत है। जीवन में स्वच्छता से तात्पर्य स्वस्थ होने की अवस्था से भी है। साफ–सफाई एक अच्छी आदत है जो हमारे जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाती है। यह हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग भी है जो हमारे जीवन के लिये बहुत ही महत्वपूर्ण है। हमारे लिए शरीर की भी साफ–सफाई बहुत जरूरी है जैसे रोज नहाना, स्वच्छ कपड़े पहनना, दांतों की सफाई करना, नाखून काटना आदि। दैनिक क्रियाओं को समय पर पूर्ण करना चाहिए। स्वस्थ रहने और शांति से जीवन जीने का अच्छा गुण है। इसके लिये घर के बड़े–बुजुर्गों को और माता पिता को अपने बच्चों में इस आदत को बढ़ावा देना चाहिए ताकि वे स्वच्छता के महत्व को समझे।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य– भारत को स्वच्छ बनाने के लक्ष्य के साथ देश की राजधानी नई दिल्ली के राजघाट पर गत 2 अक्टूबर 2014 को प्रधानमंत्री जी ने स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत की थी। इस अभियान के तीन लक्ष्य बताये थे – 2 अक्टूबर 2019 तक हर परिवार को शौचालय सहित स्वच्छता सुविधा उपलब्ध कराना, ठोस और द्रव अपशिष्ट निपटान व्यवस्था, गांव में साफ सफाई और पीने का पानी उपलब्ध कराना। ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम (सीआरएसपी) का प्रारम्भ 1986 में राष्ट्रीय स्तर पर हुआ था। यह गरीबी रेखा के नीचे के लोगों के यक्तिगत इस्तेमाल के लिये स्वास्थ्यप्रद शौचालय बनाने पर केन्द्रित था। इसका मुख्य उद्देश्य था कि सूखे शौचालय को अल्प लागत से तैयार स्वास्थप्रद शौचालय में बदलना। भारतीय सरकार के द्वारा

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

वर्ष 1999 में भारत में सफाई के पूर्ण स्वच्छता अभियान को बढ़ावा देने के लिए जून 2003 के महीने में निर्मल ग्राम पुरस्कार की शुरूआत हुई और निर्मल भारत अभियान की शुरूआत वर्ष 2012 हुई थी। इसके बाद स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत 2 अक्टूबर 2014 से हुई। आज के परिप्रेक्ष्य में अगर हम देखें तो स्वाधीनता प्राप्ति के बाद 68 सालों में हमने केवल नगरीय स्वच्छता के विकास पर ही जोर दिया है। नगरीय सभ्यता के लिए शौचालय की आवश्यकता है। शुरूआत से ही साफ सफाई भारत में एक प्राचीन परम्परा रही है। इस परम्परा के अनुरूप ही देश में ऐसी व्यवस्था विकसित की गई थी, जो न केवल भारतीय समाज के अनुकूल थी बल्कि पर्यावरण और पारस्थितिकी के लिए लाभकारी थी। रोमन सभ्यता के पतन के बाद लम्बे समय तक यूरोप में शौचालयों की व्यवस्था का अभाव था। स्थिति इतनी ज्यादा खराब थी कि ग्यारहवीं शताब्दी तक लोग सड़कों पर मल फेंक दिया करते थे। जिससे राह निकलने वालों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। इस काल में लोगों को जहाँ पर भी जगह मिलती वहीं पर मूत्रत्याग कर देते थे। इस पूरे कालखण्ड में मनुष्य के मल के निस्तारण की कोई व्यवस्था पूरे यूरोप में कहीं पर भी नहीं थी।

साहित्य समीक्षा–

स्वच्छता (2006)– स्वच्छता यानि साफ सफाई एक अच्छी गुणवत्ता है। जैसा कि हम कह सकते हैं कि स्वच्छता ईश्वर भक्ति के समान है। इसे 'स्वास्थ्य' और 'सौंदर्य' अन्य आदर्शों में योगदान माना जा सकता है। स्वच्छता प्रदूशणों से मुक्ति कि एक भौतिक, नैतिक अवस्था है। स्वच्छता व्यवहारिक स्तर पर बीमारी की रोकथाम में सहायक हैं। धुलाई शारीरिक स्वच्छता प्राप्त करने का एक तरीका है पानी और साबुन के साथ।

कुमार गौरव (2015)– स्वच्छता एक मनोवृत्ति है, स्वच्छता एक आदत है। आदत यूं ही नहीं बनती है। उसे बनाना पड़ता है। क्षणिक व्यवहार के कई कारक इसके पीछे कार्य कर रहे हैं। स्वच्छता विकास और सामाजिक परिवर्तन तीनों का आपस में घनिष्ट सम्बन्ध है। एक विकसित समाज की पहचान का संकेतक समाज में स्वास्थ्य और स्वच्छता का स्तर है। किसी भी समाज जहाँ के लोग गंदगी में रहते हैं या स्वास्थ्य के स्तर पर कमजोर हों उन्हें विकसित या सभ्य नहीं कहा जा सकता है। स्वास्थ्य का सम्बन्ध अनिवार्य रूप से स्वच्छता से जुड़ा हुआ है। इसलिये जहाँ स्वच्छता है वहीं स्वास्थ्य है।

तिवारी आदर्श (2016)– स्वच्छ भारत अभियान एक ऐसी योजना है। जिसने लोगों को सफाई सम्बन्धी आदतों को बेहतर बनाने और लोगों को गंदगी से होने वाले दुश्प्रभावों के बारे में बताया है तथा जन–जन तक स्वच्छता के प्रति जागरूक भी किया है। क्योंकि बिना जागरूकता के इस मिशन को पूरा नहीं किया जा सकता है और तो और स्वच्छता को लेकर समय–समय पर सेलिब्रिटी सोशल मीडिया पर अपनी तस्वीर साझा करते रहते हैं। इससे स्वच्छता को लेकर अधिक से अधिक लोग जागरूक भी हो रहे हैं।

बाल स्वच्छता अभियान (2017)– भारत में बड़े स्तर पर चलाया गया अभियान स्वच्छता अभियान है। इसके बाद बाल दिवस समारोह के एक हिस्से के रूप में भारत सरकार ने एक और अभियान "बाल स्वच्छता अभियान" प्रारम्भ किया है। यह अभियान इसलिए प्रारम्भ किया गया ताकि बच्चों के बीच स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने के लिये है। बाल स्वच्छता अभियान में स्वच्छ परिवेश, खेल का मैदान, शुद्ध पेय जल सुविधाएं उचित शौचालय सुरक्षित और स्वच्छ भोजन और व्यक्तिगत स्वच्छता शामिल है।

पत्रिका डाउन टू अर्थ (2017)– इस पत्रिका के लेख में यह बताने का प्रयास किया गया है कि खुले में शौच से मुक्त होने के बाद गंगा किनारे के राज्यों में रोजाना इतना अत्यधिक मल–मूत्र निकलता है कि उत्तराखण्ड 73.8 लाख लीटर, उत्तर प्रदेश में 727.3 लाख लीटर, बिहार में 308.9 लाख लीटर और झारखण्ड में 03.1 लाख लीटर तथा पश्चिम बंगाल में 690.5 लाख मीटर मल मूत्र निकलता है। यह एक बहुत ही गम्भीर समस्या है। इसी समस्या को दूर करने के लिए स्वच्छ भारत मिशन चलाया जा रहा है। ताकि समस्याओं का समाधान किया जा सके।

उद्देश्य –

1. स्वच्छता के प्रति जागरूकता के स्तर का अध्ययन करना।
2. नागरिकों में स्वच्छता संबंधी आदतों में सुधार को देखते हुए का अध्ययन करना।

शोध विधि– प्रस्तुत शोध अध्ययन स्वच्छ भारत अभियान और गांधी जी के दृष्टिकोण (एक कदम स्वच्छता की ओर) में अध्ययन के लिए शोध अध्ययन को ध्यान को रखते हुए द्वितीयक समंकों का उपयोग किया गया है। द्वितीयक तथ्यों को प्राप्त करने का तरीका प्राथमिक रूप से एकत्रित किए गए तथ्यों से भिन्न होता है। शोधकर्ता ने द्वितीयक समंकों के माध्यम से सूचनाएं एकत्रित की जिसके अंतर्गत शोध पत्रिकाओं, किताबों, अखबारों, डायरी एवं इंटरनेट इत्यादि को शामिल किया गया है।

स्वच्छता का विश्लेषण– स्वच्छता को जीवन की आदत बनाकर ही हम इस देश के गौरव को बरकरार रख सकेंगे।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

स्वच्छता को अपनाकर ही हम सर्वांगीण विकास के सौपान तय कर पायेंगे। पिछले दिनों सरकार ने राष्ट्रीय स्वच्छता सर्वेक्षण के नतीजे घोषित किये हैं। सबसे स्वच्छ शहर का खिताब एक बार फिर इंदौर के नाम रहा और भोपाल सबसे स्वच्छ राजधानी वर्ग में पहले स्थान रहा। वहीं इस सर्वे में छत्तीसगढ को बेस्ट परफार्मेंस स्टेट अवार्ड से नवाजा गया है। 10 लाख आबादी वालों शहरों में अहमदाबाद और पांच लाख से कम आबादी वाले शहरों में उज्जैन पहले स्थान पर रहे। हालांकि अभी भी इस मुहीम में सरकारी भागीदारी ही ज्यादा है। स्वच्छता का दायरा इतना विस्तृत है कि इसे अमल लाने के लिए कई स्तरों पर विचार करने की आवश्यकता है। मन, वाणी, कर्म, शरीर, ह्रदय, चित्त, समाज, परिवार, संस्कृति और व्यवहार से लेकर धर्म और विज्ञान तक में स्वच्छता का विशेष महत्व है। मध्य प्रदेश के इन्दौर शहर में भी स्वच्छता लोगों की आदत में शुमार हुई है। यह प्रतियोगिता लोगों में जागरूकता फैलाने के लिहाज से नितांत उपयोगी और लाभदायक है।

निष्कर्ष– स्वच्छता अभियान ने भारतीय नागरिकों को जीवन स्तर में सुधार के साथ साथ शौच, स्वच्छता आदि के बारे में जागरूकता फैलाने में सुधार देखा है। इस अभियान का यह प्रभाव पड़ा कि देश के कोने–कोने से प्रत्येक व्यक्ति इसमें भाग ले रहा है, जिसके कारण देश पहले से अधिक स्पश्ट होने लगा है। यदि सभी भारत देश के नागरिक इस तरह के प्रयास करते रहे तो सम्पूर्ण स्वच्छ भारत का लक्ष्य जल्दी ही प्राप्त होगा। लोग स्वच्छता के प्रति जागरूक हो रहे हैं। पहले लोगों को इतना ज्ञान नहीं था। लेकिन जब से वर्तमान प्रधानमंत्री जी सत्ता में आये हैं उन्होंने लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया है। उन्होंने स्वच्छता अभियान चलाया तथा सड़कों पर स्वयं झाड़ू लगाकर लोगों को जागरूक किया। इससे लोगों पर काफी फर्क पड़ा और साथ ही साथ युवाओं, छात्र–छात्राओं को भी जागरूक किया। लोग स्वच्छता के प्रति जागरूक इसलिये भी हो रहे हैं क्योंकि आधुनिक संचार प्रणाली मौजूद है जैसे इन्टरनेट, टी0 वी0, मोबाईल इत्यादि।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. https://www.sciencedirect.com
2. https://www.ncbi.nlm.nih.gov>pmc
3. https://hin.Encyclopedia-titanica.com
4. https://hihindi.com
5. https://hindi.webduniya.com
6. Author – रवि शंकर (भारतीय धरोहर मई, जून 2016)
7. https://en.m.Wikipedia.org>Wiki
8. https://hindi.Webduniya.com>Mahatma
9. https://ccby-SA3.0 के तहत उपलब्ध है।
10. कुमार गौरव 2015 : सामाजिक मानसिकता में बदलाव से ही सम्भव है।
11. तिवारी, आदर्शः सफलता की ओर स्वच्छ भारत अभियान 2 Oct-2016 स्वच्छता के प्रति बढ़ रही जन–जागरूकता।
12. बाल स्वच्छता अभियान : June 23, 2017
13. पत्रिका डाउन टू अर्थ – संकट में गंगा फरवरी 2017 Buy online at:
14. शकील सिद्दीकी, 28 मार्च, 2019
15. https://anmolhindi.com

*****